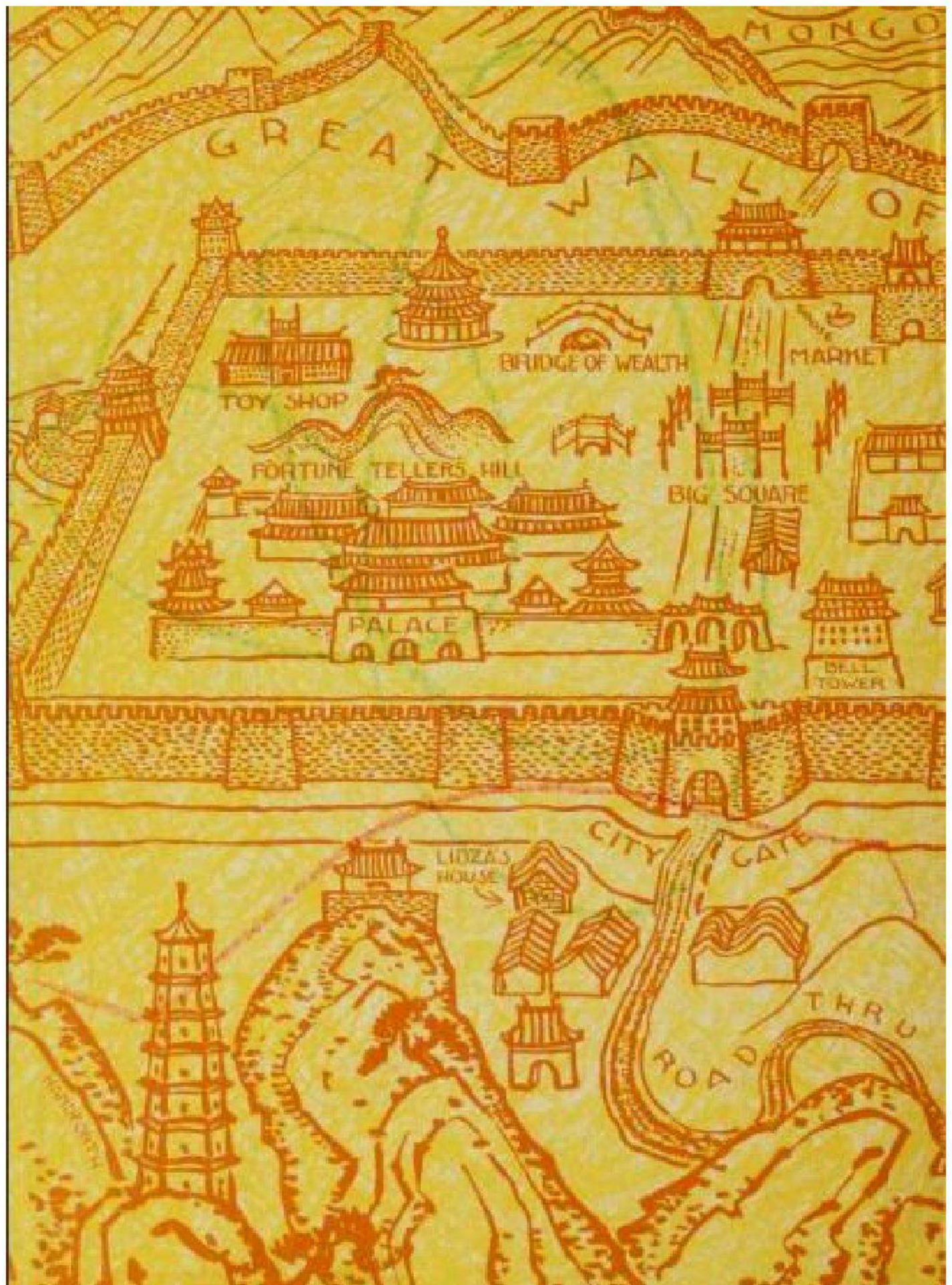


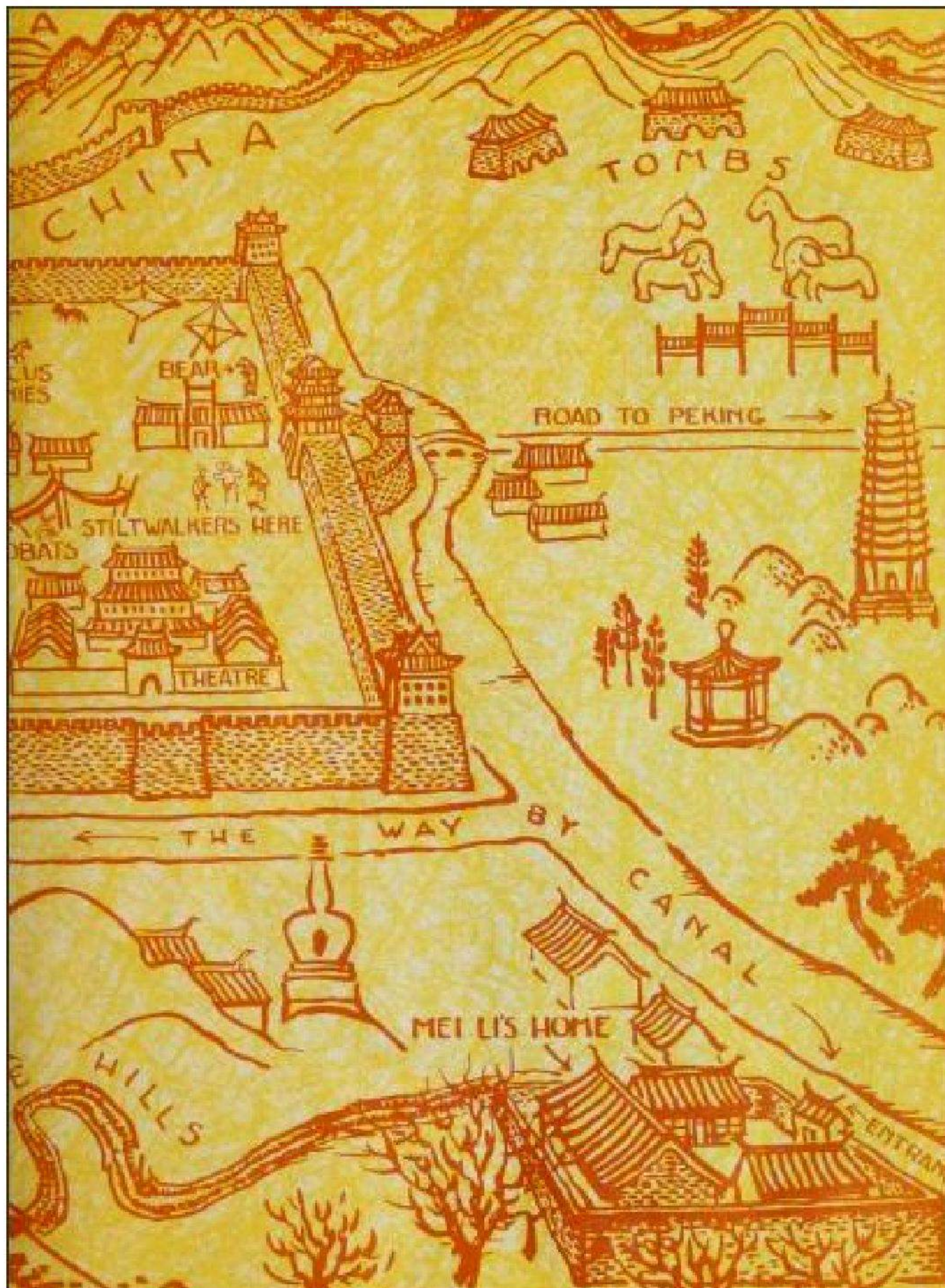
माई-ली

चीनी लोक कथा

थॉमस, हिंदी : विदूषक

美麗的新年







माई-ली

चीनी लोक कथा

थॉमस, हिंदी : विदूषक



घर की पहरेदारी के लिए हम कुत्ता रखते हैं.
सुअर भी बहुत काम का जानवर है.
बिल्ली, चूहे पकड़ती है,
पर बताओ, तुम जैसी
लड़की के साथ हम क्या करें?

माई-ली

उत्तरी चीन में, चीन की महान दीवार के पास, एक शहर बसा था जो बड़ी दीवार से छिपा था. शहर के पास ही स्नो से लदे गाँव में एक घर था. घर के चारों ओर एक दीवार थी. नए साल से एक दिन पहले सुबह के समय घर में सभी लोग बहुत व्यस्त थे. **माई-ली** छोटी लड़की थी, उसके बाल एक छोटी पिग-टेल में बंधे थे. वो घर को झाड़-पोंछ रही थी, साफ़-सफाई कर रही थी. उसकी माँ मिसेस वांग सब्जियां काट रहीं थीं, सेंक रहीं थीं और तल रही थीं. उसका भाई भी चीज़ें मिला रहा था और उन्हें चख रहा था. “रसोई-देवता” के सम्मान एक बड़े भोज की तैयारी चल रही थी. “रसोई-देवता” उस दिन आधी-रात को चीन के हरेक घर में आकर लोगों को बताने वाले थे कि उन्हें अगले साल क्या करना चाहिए.

सिर्फ अंकल वांग कोई काम नहीं कर रहे थे. वो सिर्फ बातें कर रहे थे और ज़ोर-जोर से हंस रहे थे. आज शहर में क्या-क्या मज़ेदार चीज़ें देखनी हैं वो उनके बारे में बता रहे थे. अक्सर वो अपने ऊँट पर शहर में सब्जियां बेचने जाते थे इसलिए उन्हें शहर के बारे में काफी कुछ पता था.

सैन-यू उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था क्योंकि माँ ने उससे कहा था कि वो नए साल का उत्सव शहर में देखने जा सकता था.



मिसेज़ वांग भी रुक़ीं और उन्होंने उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनीं. उनकी रुचि थी लाल-मोमबत्तियों और कागज़ के नकली नोटों में जिन्हें सैन-यू मेले से “रसोई-देवता” को खुश करने के लिए लाने वाला था.

माई-ली ने बड़े दुखी होकर उनकी बातें सुनीं, क्योंकि नए साल के मेले वाले दिन लड़कियों को घर पर ही रहना पड़ता था.



“नहीं! नहीं!” उसने अपनी चोटी हिलाते हुए खुद से कहा. “अगर मैं हमेशा घर पर ही रहूंगी तो भला फिर मैं किस काम की? मैं भी अपने खजाने के साथ सैन-यू जैसे ही मेले का आनंद लूंगी.”



उसके बाद वो सैन-यू के पीछे-पीछे खलिहान में गई और उसने बत्तखों और सुअरों को नए साल की शुभकामनाएं दीं.



“तुम्हें नया साल मुबारक हो, श्रीमती सुअर!” उसने नम्रता से झुकते हुए कहा.

“तुम्हें भी नया साल मुबारक हो, श्रीमान बत्तख!” उसने नम्रता से झुकते हुए कहा.

फिर जब कोई नहीं देख रहा था तब माई-ली चुपके से गेट से बाहर निकल गई.



गेट के बाहर निकलने के बाद माई-ली तेज़ी से आगे बढ़ी और वो सैन-यू के पास पहुँच गई.

“सैन-यू कृपा मुझे शहर के मुख्य द्वार तक अपनी बर्फ-गाड़ी में ले चलो,” माई-ली ने कहा.

“कोई लड़की भला मेले में जाकर क्या करेगी?” सैन-यू ने माई-ली का मज़ाक उड़ाते हुए कहा.

“अगर तुम बर्फ-गाड़ी में मुझे अपने साथ लेकर जाओगे तो मैं तुम्हें नीला रंग का एक सुन्दर कंचा दूँगी,” माई-ली ने कहा.



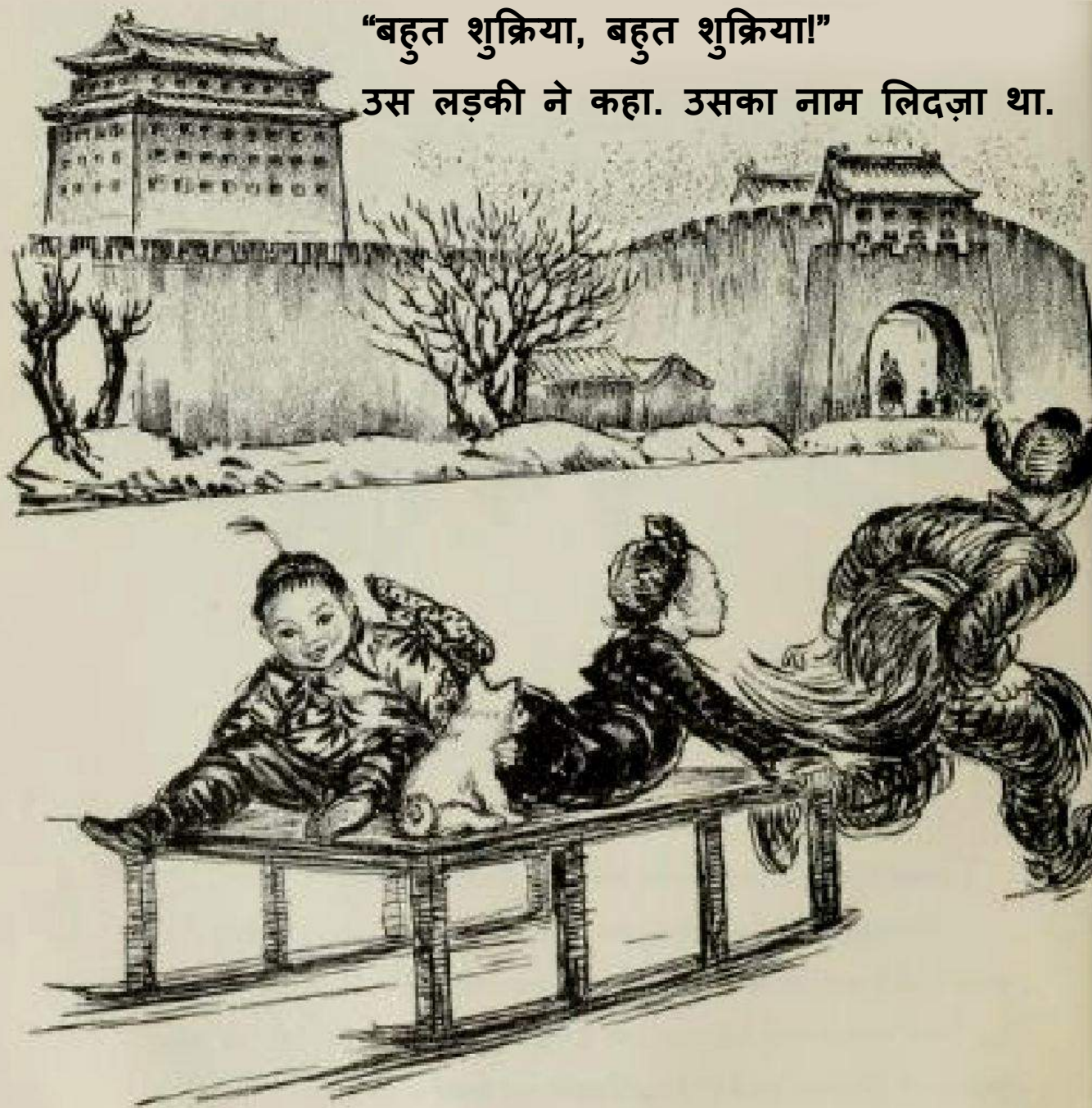
सैन-यू उसके लिए तैयार हो गया. "ठीक है!" उसने कहा.

फिर उनके कुत्ते इगो ने भी साथ चलने की सोची. सैन-यू की चिड़िये भी घर पर नहीं रुकना चाहती थीं. फिर सैन-यू, माई-ली, इगो और चिड़ियें सभी ने बर्फ-गाड़ी में बैठकर अपनी यात्रा शुरू की. एक आदमी बर्फ-गाड़ी को खींच रहा था. बर्फ-गाड़ी नहर की जमी बर्फ पर दौड़ रही थी.

वो बहुत तेज़ी से सफ़ेद नहर पर बर्फ-गाड़ी दौड़ी जा रही थी.
जल्दी ही वो शहर के मुख्य द्वार के बाहर के पुल पर पहुंचे.
वहां पर माई-ली ने अपना एक भाग्यशाली सिक्का एक गरीब भीख
मांग रही लड़की को दिया.

“बहुत शुक्रिया, बहुत शुक्रिया!”

उस लड़की ने कहा. उसका नाम लिदज़ा था.



“कितनी खुशी की बात थी एक लड़की के लिए नए साल के मेले में जाना! भाग्यशाली सिक्का उसकी किस्मत खोलेगा. पर एक बात याद रखना! मुख्य द्वार के बंद होने से पहले ही घर वापिस आना नहीं तो फिर तुम शहर को दुबारा कभी नहीं छोड़ पाओगी. फिर तुम “रसोई-देवता” का भी सत्कार नहीं कर पाओगी.”





पुल से कुछ दूरी पर एक गधा उनका इंतज़ार कर रहा था. फिर सैन-यू, माई-ली, इगो और चिड़ियें सभी गधे की पीठ पर बैठे. गधा हल्की चाल से उन्हें मुख्य-द्वार में से होता हुआ शहर में ले गया.

वो अब सभी शहर के अन्दर थे और धीरे-धीरे करके सड़क पर आगे बढ़ रहे थे.



वहां लोग रिक्शा पर, ऊंटों पर इधर-उधर जा रहे थे. महिलाएं कांच की बग्नियों में घूम रही थीं. मर्द, छोटी मंगोल घोड़ियों पर सवारी कर रहे थे. और लड़के-लड़कियां गधों पर सवार थे. सभी लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने थे और सभी लोग नए साल के मेले का मज़ा लेने के लिए जा रहे थे. माहौल बिल्कुल वैसा ही उत्साहजनक था जैसा अंकल वांग ने बताया था.



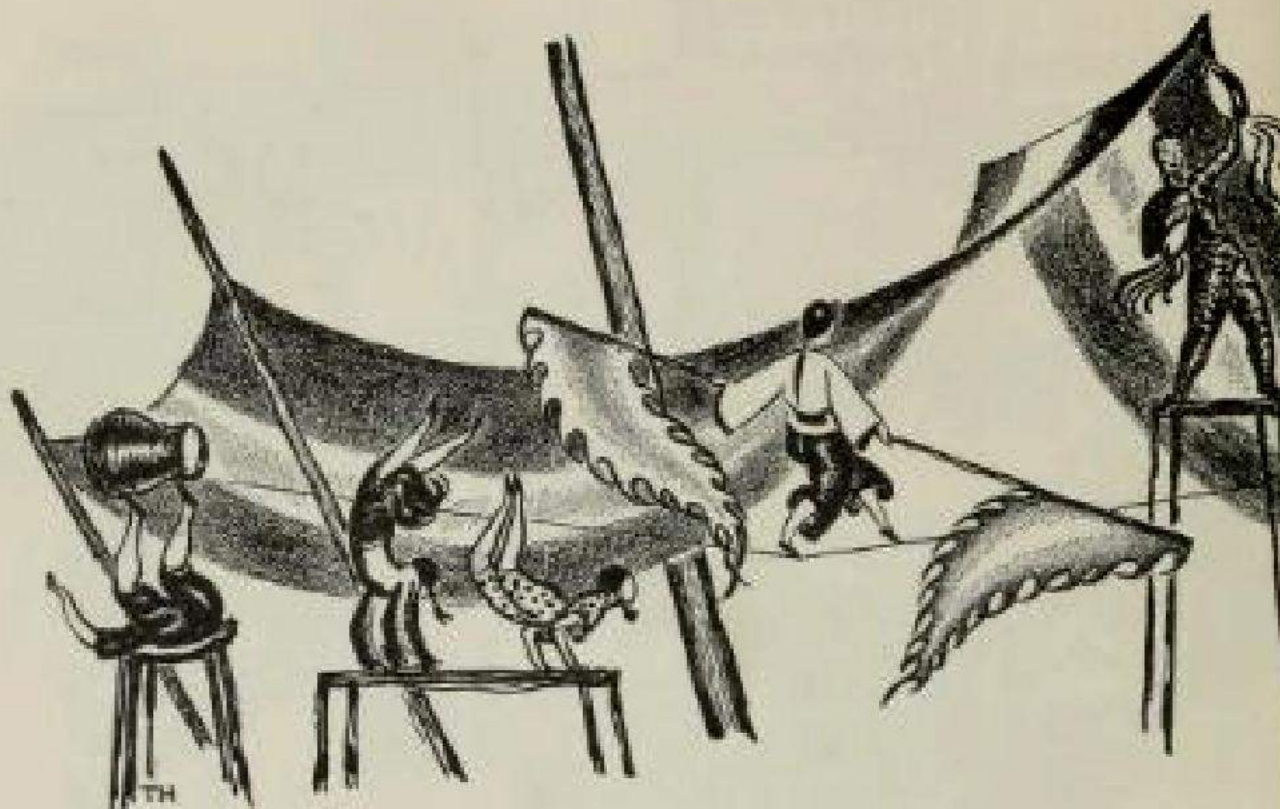
जब वो लोग बड़े चौक पर पहुंचे तब तक दोपहर के खाने का समय हो गया था. शहर के कुछ बच्चे बीन्स और दही की बनी मिठाई (कैंडी) खा रहे थे. कुछ बच्चे लम्बी सीकों पर शहद में डूबे फल खा रहे थे.

माई-ली भी कैंडी खाना चाहती थी. पर उससे भी ज्यादा वो पटाखे खरीदना चाहती थी. उसने अपने एक सिक्के से पटाखे खरीदे. पर पटाखे बजाते हुए उसे डर लगा इसलिए उसने पटाखे सैन-यू को दिए और फिर हथेलियों से कान बंद करके वहां से दौड़ी.



“बैंग! बैंग!” पटाखों की बहुत जोर की आवाज़ हुई.

“बाप रे बाप!” सैन-यू ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा. “लड़कियां कितनी डरपोक होती हैं. एक लड़की भला नए साल में मेले में क्या करेगी?”





“बहुत सारी चीज़ें,” माई-ली ने कहा. “ज़रा सर्कस की उन लड़कियों की तरफ देखो. वे ऊंचे बांसों (स्टिल्ट) पर चल सकती हैं. वे तनी रस्सी पर भी संतुलित होकर चल सकती हैं. वे अपने हाथों-पैरों से हवा में बर्तन फेंककर उन्हें पकड़ सकती हैं. और मैं भी यह सब करतबें कर सकती हूँ!”

फिर माई-ली तेज़ी से सर्कस वाली एक ताकतवर लड़की के पास दौड़ी हुई गई. “कृपा कर मुझे अपनी एक हथेली से उल्टा लटकायें?” माई-ली ने प्रार्थना की. “मैं उसे अनुभव करना चाहती हूँ.”



सर्कस वाली लड़की ने माई-ली को अपने एक हथेली से हवा में ऊंचे उठाया. माई-ली खुद को अच्छी तरह संतुलित कर पाई. पर उसके पैर कुछ ज़रूर कांपे.



“अरे! इसमें क्या है,” सैन-यू ने माई-ली का मज़ाक उड़ाते हुए कहा. “इस ट्रिक को तो कोई भी सीख सकता है. पर लड़के ही सचमुच की एक्टिंग कर सकते हैं!” सैन-यू ने एक विवेकशील बूढ़े का भेष बनाया था. उसने एक लम्बी दाढ़ी पहनी थी. सैन-यू एक अन्य लड़के के साथ एक शो में एक्टिंग कर रहा था. उस नाटक में वो लड़का सम्राट बना था और उसने सर पर फूलों का गुलदस्ता पहना था. वो दोनों एक गाने का अभ्यास कर रहे थे.

लड़कियां एक्टर नहीं बन सकती थीं, यह माई-ली को पता था. इसलिए उसने आसपास कुछ और करने की सोची.



मेले के एक कोने में एक काला भालू था, जिसकी नाक में एक छल्ला पड़ा था. वो अब सैन-यू को अपनी बहादुरी दिखाएगी. वो अब भालू से करतब कराएगी!

माई-ली की चोटी कुछ हिली. उसने भालू को केक का एक टुकड़ा खाने को दिया. भालू ने बार-बार अपना पंजा ऊपर-नीचे किया जैसे वो केक की भीख मांग रहा हो.



“वो एक बूढ़ा और पालतू भालू है,” सैन-यू चिल्लाया. “तुम मुझे देखना – मैं एक जंगली चालाक शेर का शिकार करूंगा!”

“मुझे पागल मत बनाओ!” माई-ली चिल्लाई. “वो लम्बे कानों वाला शेर असली नहीं है. असल में वो दो लड़के हैं - उनमें एक शेर का मुखौटा पकड़े हैं और दूसरा शेर की पूँछ घास-फूस की बना है. उनपर गोली चलाने की गलती बिल्कुल मत करना!”

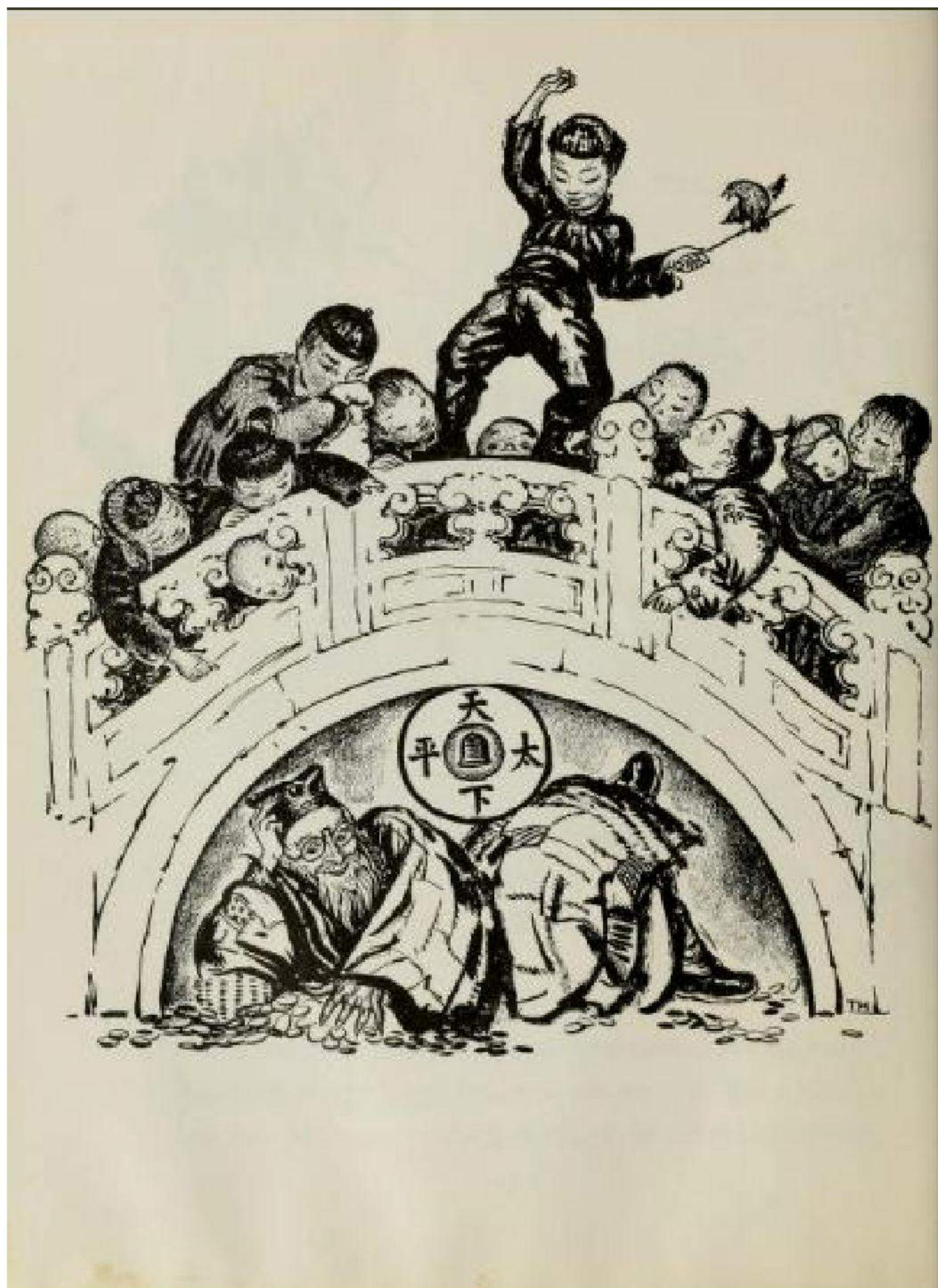


फिर माई-ली उन सर्कस की लड़कियों के साथ जा मिली जो सर्कस की छोटी घोड़ियों पर सवारी कर रही थीं. माई-ली की घोड़ी फुदकने लगी और उससे माई-ली की छोटी भी ऊपर-नीचे नाचने लगी.



अब माई-ली खुद को एक असली सर्कस आर्टिस्ट समझ रही थी. पर जल्द ही उसे सैन-यू की याद सताने लगी.

उसके बाद वो सड़क पर चली और उसने सैन-यू को धन-दौलत के पुल के पास खड़ा पाया. धन-दौलत के पुल के नीचे एक छोटी घंटी लटकी थी.



उस घंटी के नीचे एक दुबला-पतला, झुर्रियों वाला पुजारी लेटा था और वो बार-बार यह बुदबुदा रहा था. “इस घंटी को एक सिक्के से बजाओ, फिर तुम्हें पूरे साल के लिए धन मिल जाएगा.”

“अरे वाह!” माई-ली ने कहा, “चलो मेरे पास एक आखिरी सिक्का बचा है, और वो घंटी इतनी छोटी है! मुझे लगता है कि मैं उस घंटी को कभी नहीं बजा पाऊंगी. सैन-यू तुम मेरे सिक्के को फेंक कर देखो.” फिर उसने अपना आखिरी सिक्का सैन-यू को दे दिया.

“टिन! टिन!” घंटी से आवाज़ आई.

“अरे अब मैं को बहुत अमीर हो गया!” सैन-यू ने कहा. “मैं और इगो अब जाकर एक पतंग खरीदेंगे. मेरी गैरहाजरी में कृपा मेरी चिड़ियों का ध्यान रखना.”

“ठीक है,” माई-ली ने कहा और फिर उसकी छोटी ऊपर-नीचे हिलने लगी.





“अब तो मेरा आखिरी सिक्का भी चला गया! अब मैं क्या करूँ?”
उसके बाद माई-ली पास की छोटी पहाड़ी पर चढ़ने लगी. वहां पहाड़ी
के ऊपर पेड़ के नीचे एक युवा पुजारी बैठा था जो बांस की सीकों से
लोगों को उनका भविष्य बता रहा था.

“अगर मेरा भविष्य अच्छा निकला तो फिर मैं तुम्हें एक लाल रंग
का कंचा दूँगी,” माई-ली ने कहा. “मेरा भाई जल्द ही बहुत धनी होगा
और मैं भी उसके जैसे ही भाग्यशाली होना चाहती हूँ.”



“तुम पूरे देश पर राज्य करोगी,” पुजारी ने उत्तर दिया.
यह कह कर उसने बांस की सीकों और लाल कंचे पर अपना
चंवर हिलाया.



उसके बाद माई-ली खुशी-खुशी पहाड़ी से नीचे दौड़ी हुई उतरी. अगर उन बांस की सीकों ने कहा है कि वो पूरी दुनिया पर राज्य करेगी तो वो सच ही होगा. पर राजकुमारी बने बिना, वो कैसे राज्य कर सकती थी? और वो कैसी राजकुमारी जिसके सिर पर मुकुट न हो?



पहाड़ी के नीचे उसे कुछ लड़कियां मिलीं जो मेले में जाने के लिए बिल्कुल सजी-धजी थीं. माई-ली ने उन्हें अपनी भविष्यवाणी बताई. फिर उन लड़कियों ने माई-ली के लिए एक मुकुट बनाया जिसके बीच में हरे रंग का कंचा लगा था.

अपने मुकुट को पहनकर माई-ली इतराती हुई सड़क पर निकली. उसे यह सर्कस की ट्रिक्स से कहीं ज्यादा अच्छा लगा. फिर वो एक बड़ी खिलोनों की दुकान के सामने से गुज़री.



उसे लगा कि मुकुट पहने राजकुमारी एक खिलोनों की दुकान के ज़रूर घुस सकती थी, जबकि उसकी जेब बिल्कुल खाली थी. अन्दर खिलोनों की कतारें लगी हुई थीं – पुजारी, नृतक, बूढ़े लोग, संगीतकार, बन्दर और हिरण.

“शायद,” माई-ली ने सोचा. “यह सब यहाँ पर मेरा सत्कार करने के लिए ही इकट्ठे हुए हैं,” पर वो सब खिलौने लकड़ी के बने थे. जल्दी ही माई-ली उन्हें छोड़ कर आगे बढ़ी.





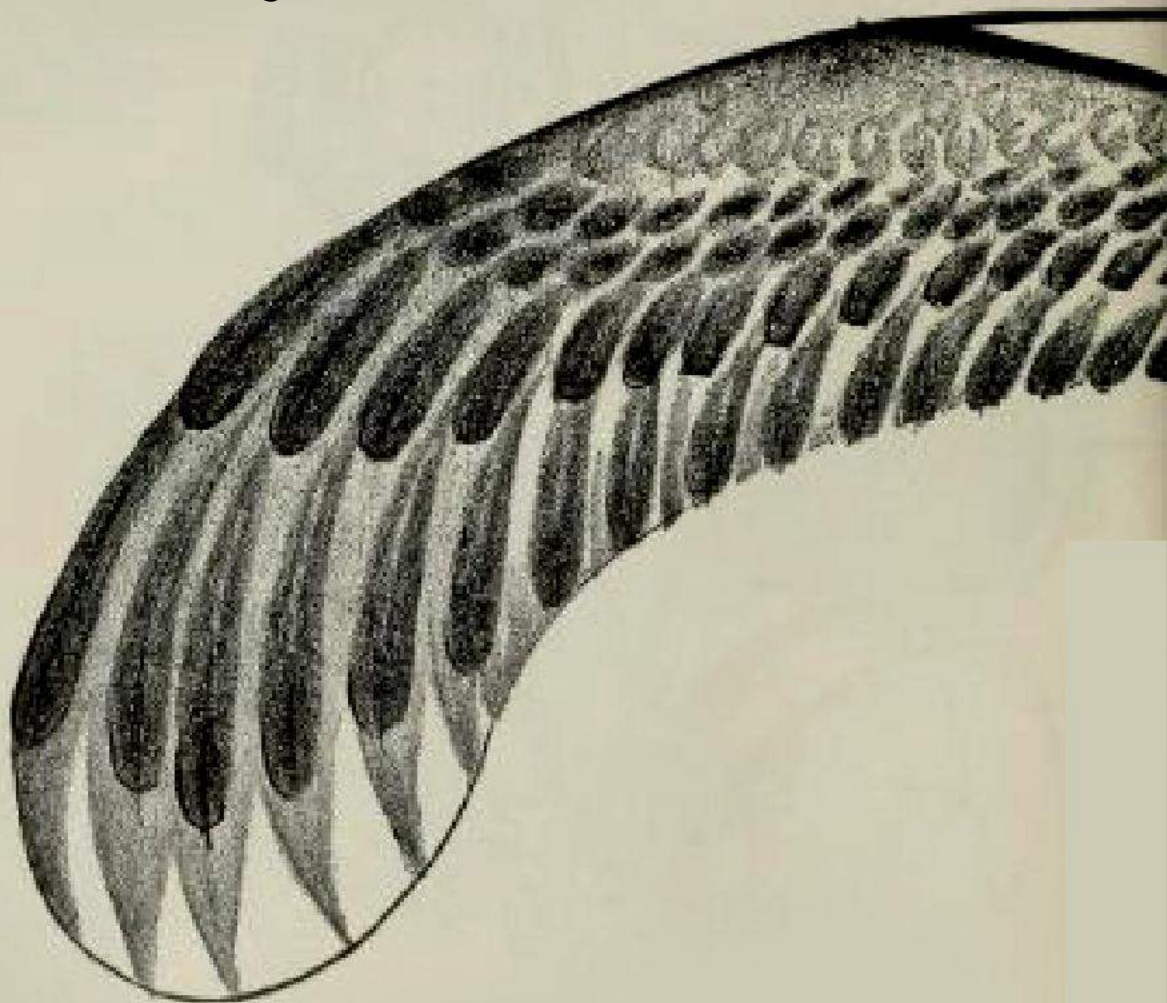
अगले कमरे में रंग-बिरंगी लालटेन थीं जिनका आकार मछलियों का था. मछलियों की बड़ी-बड़ी आँखें माई-ली को घूर रही थीं.

“वो सब मेरे सुन्दर मुकुट को निहार रही हैं,” माई-ली ने सोचा. फिर उसकी चोटी गर्व से हिलने लगी.



अगले हाल में बड़े-बड़े टिड्डे, केकड़े, कछुए और पतिंगों के आकार की लालटेनें माई-ली को घूरने लगीं. पर राजकुमारी माई-ली को इन बड़े-बड़े और डरावने जीवों के बीच अच्छा नहीं लगा. उसने इतने बड़े और भयानक जीव अपने घर के बगीचे में कभी पहले नहीं देखे थे. फिर माई-ली वहां से निकलकर बाहर दौड़ी.

बाहर बहुत तेज़ हवा चल रही थी. अचानक एक बाज़ ठंडे आसमान में से निकला. उसे देखते ही माई-ली ने सैन-यू की चिड़ियों को अपने सीने से लगा लिया जिससे बाज़ उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाए. फिर वो बाज़ार की ओर बहुत तेज़ी से दौड़ी. बाज़ ने उसके पास, बहुत पास एक गोता लगाया.



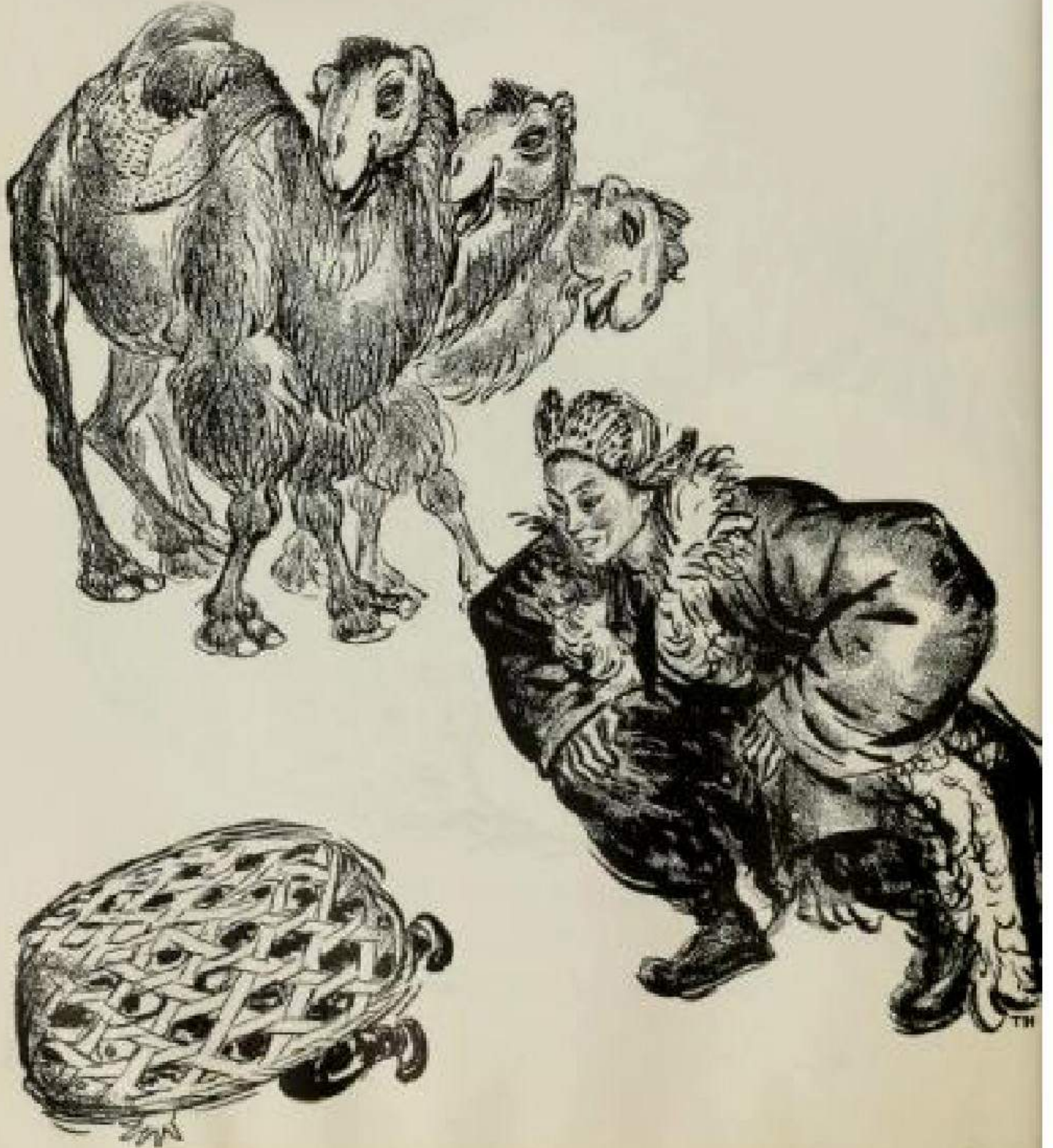
“मैं तुम्हें बचाने के लिए क्या कर सकती हूँ!” माई-ली ने चिड़ियों को देखकर कहा. अब वो वाकई में डरी हुई थी.

तभी एक बत्तख एक टोकरी में से निकल कर भागी. तुरंत माई-ली उस बड़ी टोकरी के नीचे घुस गई और चुपचाप लेट गई.



माई-ली का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा. “हौ! हौ! हौ!” की आवाजें बाहर से आने लगीं.

“वो हौ! हौ! हौ! की आवाज बाज़ की नहीं हो सकती है,” माई-ली ने अपनी चिड़ियों से कहा. फिर जब उसने टोकरी को उठाकर देखा तो उसे तीन ऊँट दिखे, जो उसकी ओर हंस रहे थे.



फिर दूसरी तरफ से “हा! हा! हा!” की आवाज़ आई और तीन आवाजों ने एक साथ कहा, “यह वो बदमाश है जिसके हमें तलाश थी!”

“चोर!” माई-ली को लगा. फिर दुबारा टोकरी के नीचे चुपचाप लेट गई जैसे वो मरी पड़ी हो. उसका दिल डर के मारे तेज़ी से धड़कने लगा.



फिर कुछ देर में कोई उसकी चोटी को खींचने लगा,
उसकी पैन्ट को खींचने लगा और साथ में भू! भू! की आवाज़
करने लगा. वो उसका कुत्ता इगो था.



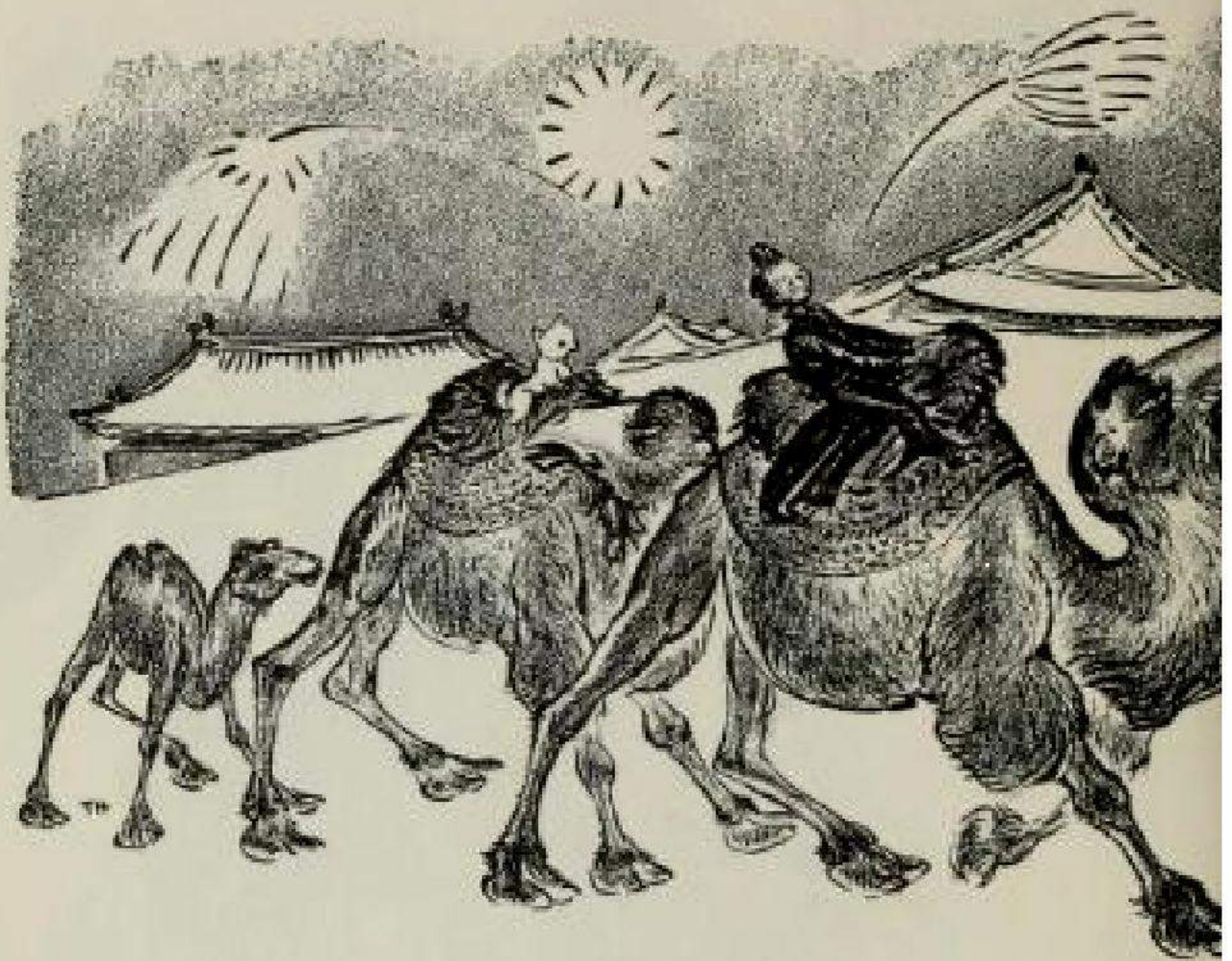


TM

“अरे!” सैन-यू चिल्लाया. वो एक ऊँट के पीछे छिपा था. “वो बाज़ नहीं था, वो मेरी पतंग थी जो तुम्हारा पीछा कर रही थी.”

“तुम वाकई में एक बहादुर लड़की हो जिसने सैन-यू की चिड़ियों को बचाया. पर क्या तुमने इस रोयेंदार टोपी में अपने अंकल को नहीं पहचाना?” अंकल वांग ने कहा.

“मैं पूरे दिन भर तुम्हारी तलाश करता रहा. अब तुम जल्दी से ऊँट पर बैठो और चलो नहीं को शहर का मुख्य द्वार बंद हो जाएगा. फिर तुम “रसोई-देवता” का स्वागत करने के लिए घर नहीं पहुँच पाओगी.”



“चलो चलते हैं,” अंकल वांग ने कहा, और फिर वो पहले ऊँट पर बैठे. उन्होंने माई-ली को अपने सामने बिठाया. सैन-यू और उसकी चिड़ियें दूसरे ऊँट पर बैठीं और इगो शान से अकेला तीसरे ऊँट पर बैठा.



फिर तीनों ऊंटों ने अपनी सवारियों के साथ चलना शुरू किया. वो अँधेरे में बहुत तेज़ गति से आगे बढ़े. बीच-बीच में नए साल के राकेट की चिंगारियां उनके पास आकर गिरती. पर जब तक वो पहुँचें तब तक बहुत देर हो चुकी थी! शहर का दरवाज़ा बंद हो चुका था!



पर नहीं! लिदज़ा – उस भिखारी लड़की ने अपने दोनों पैरों से दरवाज़े को खोले रखा था. उसे पता था कि माई-ली को आधी रात से पहले घर पहुंचना था जिससे कि वो रसोई-देवता का स्वागत कर सके.

बहुत तेज़ी ने ऊंटों ने शहर के मुख्य दरवाज़े को पार किया.



उसके बाद वो अँधेरे में पहाड़ियों पर चलते रहे. उस अँधेरी रात में ऊँट बिल्कुल भूत जैसे लग रहे थे.

माई-ली के सिक्के खत्म हो गए थे. उसके रंगीन कंचे भी खत्म हो गए थे. उसका मुकुट भी खो गया था. उसे अब बहुत जोर की भूख लगी थी और उसके पेट में चूहे कूद रहे थे. उसकी चोटी एक ओर शांत पड़ी थी. उसे लग रहा था जैसे दौड़ती घोड़ियाँ, कूदते भालू और लम्बे कानों वाले शेर उसका पीछा कर रहे हों. वो भूल चुकी थी कि वो एक राजकुमारी थी.

हाँ! दुनिया का कोई भी महल, घर जितना अच्छा नहीं हो सकता है. दीवार के पीछे पेड़ों के बीच अपने घर को देखकर उसे कितनी खुशी मिली, कितना सकून मिला.

“मेले में घूमने के बाद सबसे ज्यादा मज़ा घर वापिस आने में मिलता है,” माई-ली खुशी से चिल्लाई. फिर अंकल वांग ने उसे ऊंट की पीठ के ऊपर से उतारा. “हम लोग नए साल के उत्सव के लिए बिल्कुल सही समय पर वापिस आए हैं.”



“तुम क्योंकि कोई उपहार वापिस घर नहीं लाए हो इसलिए तुम्हें उदास होने की कोई ज़रूरत नहीं है,” मिसेस वांग ने सैन-यू से कहा. “तुम हमारे लिए हमारी राजकुमारी को वापस लाए हो. वो हमारे दिलों पर राज करती है.” फिर “रसोई-देवता” का इंतजार करते समय माई-ली सोचती रही. “देखो, माँ को भी पता है कि मैं राजकुमारी हूँ, पर फिर मेरा राज्य कहाँ है?”





आधी रात के समय “रसोई-देवता” आग की लपटों के पीछे दिखाई दिए। उस समय शहद से लिपटी मिठाईयों के पास अगरबत्तियों का धुआं मंडरा रहा था। फिर “रसोई-देवता” ने माई-ली को देखकर कहा, “देखो यह घर ही तुम्हारा महल और राज्य है। इस घर की चारदीवारी के अन्दर ही तुम्हारे प्रिय लोग रहते हैं।”

यह सुनकर माई-ली बहुत खुश हुई। “कुछ दिनों के लिए यह चलेगा,” उसने सोचा।

यह वो गरीब राजकुमारी है
जिसका घर साफ़-सुथरा है
वहां दूर-दूर तक,
गंदगी का नमो-निशां नहीं है.

उसका भोजन राजा के खाने
ले लिए भी अच्छा है
उसके बाल और कपड़े
हमेशा साफ़-सुथरे रहते हैं.



